आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 3 | अंक : 11 | बीकानेर, जुलाई, 2016 | मूल्य : ₹ 2.00

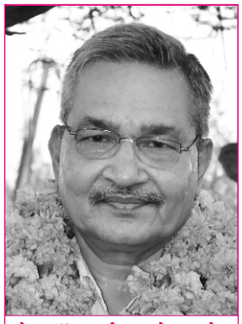

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से.....

पशुपालकों के कल्याण में राजुवास के सतत् प्रयास

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाईयों!

राजुवास अपनी स्थापना के 6 वर्षों में 'टीम राजुवास' के अथक प्रयासों से एक तेजी से आगे बढ़ता हुआ विश्वविद्यालय बना है। विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के प्राथमिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के साथ–साथ ही कृषक और पशुपालक समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों के प्रति भी सजग है। हमने सामाजिक सरोकार और पशुपालकों के हित को सर्वोपरि मानते हुए अपनी योजनाओं और कार्यक्रमों को तैयार कर लागू किया है। राज्य सरकार ने भी 'टीम राजुवास' के इन प्रयासों के मद्देनजर मुझे एक वर्ष के कार्यकाल का विस्तार देकर आपकी खिदमत का मौका दिया है। आप सभी के सहयोग और आर्शीवाद से राजुवास की वर्तमान विकास गति को बरकरार रखा जाएगा। कार्य के प्रति निष्ठा और मेहनत से ही विश्वविद्यालय को बुलन्दियों पर ले जाया जा सकता है। नए कार्यक्रमों और योजनाओं को निरंतर जोड़ते हुए इसके वित्तीय आधार को मजबूत बनाने के साथ–साथ पशुपालक समुदाय और पशुधन के लिए उम्दा किस्म की सेवाएं सुलभ करवाना हमारा ध्येय रहेगा। विश्वविद्यालय ने वित्तीय सुदृढ़ीकरण के लिए वर्ष 2050 तक का रोड मैप तैयार कर उस पर अमल करने का कार्य शुरू किया है। हम अपने फार्म और अन्य वित्तीय स्त्रोतों के सहयोग से आय बढ़ायेंगे। पशुपालन क्षेत्र में कौशल विकास के कार्यक्रमों को तेजी से लागू किया जाएगा। केन्द्रीय और राज्य सरकार की प्राथमिकताओं के अनुरूप विभिन्न क्षेत्र में भी राजुवास आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् से विश्वविद्यालय को अधिस्वीकरण करवाने का कार्य शीघ्र ही पूरा किया जायेगा, जिससे नई परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता की उपलब्धता बनी रहे। विश्वविद्यालय पशुपालकों के हित में नवाचारों, अनुसंधान व अन्य कार्यों पर तेजी से अमल करेगा। राज्य में पशुचिकित्सा की अधुनातन तकनीकों का विकास व उपचार सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के प्रयासों को और गति दी जाएगी। राज्य के प्रत्येक जिले में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और चिकित्सकों की उपस्थिति को भी सुनिश्चित किया जाएगा।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

माननीय कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी द्वारा 24 जून, 2016 को
''प्रदेश में पशुपालन के विकास में राजुवास के प्रयास'' प्रकाशन का जयपुर में विमोचन

विश्वविद्यालय के मुख्य समाचार

कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत का कार्यकाल बढ़ाए जाने पर अभिनन्दन

माननीय राज्यपाल और मुख्यमंत्री का जताया आभार

राज्य सरकार द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत का कार्यकाल एक वर्ष बढ़ाए जाने के आदेश की खबर से विश्वविद्यालय में छात्रों, कर्मचारियों और शिक्षकों में खुशी की लहर दौड़ गई। विश्वविद्यालय के समस्त कर्मचारियों, छात्रों और शिक्षकों ने उनका अभिनन्दन किया तथा माननीय राज्यपाल श्री कल्याण सिंह और माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे का आभार जताया गया। विश्वविद्यालय द्वारा नवाचारों और पशुपालकों के हित में किए जा रहे कार्यों और उत्कृष्ट परिणामों के मद्देनजर ही माननीय राज्यपाल एवं राज्य सरकार द्वारा कुलपति का कार्यकाल बढ़ाया गया है।

माननीय कुलपति का अभिनन्दन करते हुए शिक्षकगण

विद्यार्थियों द्वारा माननीय कुलपति का स्वागत

छात्रों व कर्मचारियों द्वारा माननीय कुलपति का स्वागत

जनसमूह द्वारा माननीय कुलपति का अभिनन्दन

कर्मचारी संघ द्वारा माननीय कुलपति का स्वागत व अभिनन्दन

जयपुर में माननीय कुलपति का अभिनन्दन करते हुए शिक्षकगण

राजुवास को 95 करोड़ रू. की चार नई परियोजनाओं की मंजूरी के साथ बजट आंवटन

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में वेटरनरी विश्वविद्यालय को इस वर्ष 95 करोड़ रू. राशि की चार नई परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। परियोजना की राज्य स्तरीय स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक में वित्तीय वर्ष 2016–17 के लिए राजुवास को 37.75 करोड़ रू. का बजट आंवटित किया गया है। राज्य में पहली बार सेन्टर फॉर डॉयग्नोसिस सर्विलेन्स एण्ड रिस्पांस ऑफ जूनोटिक डिजिजेज शुरू किया जाएगा। 8 करोड़ 83 लाख रू. राशि की इस नई परियोजना को 5 वर्ष के लिए स्वीकृत किया गया है। देश में अपनी किस्म की इस परियोजना में राजुवास के वैज्ञानिक मनुष्यों से पशुओं में होने वाली बीमारियों के निदान, निगरानी और प्रतिक्रिया के अनुसंधान कार्य को शुरू कर सकेंगे। राज्य सरकार ने वेटरनरी विश्वविद्यालय में कामधेनू शोध पीठ की स्थापना पर अपनी सहमति प्रदान की थी। 3 वर्ष की इस नई परियोजना का बजट अनुमान 17.90 करोड़ रू. है। राजुवास में "केमल एप्लाईड जेनेटिक्स एण्ड इम्यूनोलॉजी रिसर्च सेन्टर" की 65.03 करोड़ बजट अनुमान की 5 वर्षीय परियोजना को भी स्वीकृति मिली है। विश्वविद्यालय को आर.के.वी.वाई. की चौथी परियोजना हेतु 2 करोड़ 50 लाख रू. राशि के बजट को स्वीकृति मिली है। इसके तहत वेटरनरी विश्वविद्यालय में पशुधन और पोल्ट्री सेक्टर के स्वास्थ्य में सुधार के लिए एपीडेमियोलॉजिकल मैपिंग ऑफ एन्टीमाइक्रोबाईल रेसिस्टेंस एण्ड इट्स अन्डरलाईंग जेनेटिक मैकेनिज्म का कार्य किया जाएगा।

'पशुपालन नए आयाम' अब व्हाट्सएप पर उपलब्ध

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रतिमाह प्रकाशित होने वाली "पशुपालन नए आयाम" पत्रिका अब व्हाटसएप पर भी उपलब्ध हो गई है। गत 2 वर्ष 10 माह से लगातार प्रतिमाह इसका प्रकाशन करके डाक द्वारा प्रगतिशील पशुपालकों, कृषकों, पशुपालन विभाग, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान की शैक्षणिक संस्थाओं, राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों में भिजवाई जा रही है। पूरे राज्य में इस पत्रिका की मांग और प्रचार को देखते हुए इसे व्हाट्सएप पर भी सुलभ करवाया गया है। राज्य भर के कृषक–पशुपालक, विद्यार्थी, शिक्षक, व्यापारी और पशु–पक्षी प्रेमियों सहित प्रेस एण्ड मीडिया के व्हाट्सएप समूह में भी पत्रिका पढ़ने को उपलब्ध रहेगी। व्हाट्सएप समूहों द्वारा देश–विदेश तक इनका प्रसार अब सुगमता से हो सकेगा।

'ग्रीष्म ऋतु में भैंसों के रख–रखाव व वैज्ञानिक प्रबंधन' पर 50 पशुपालकों का प्रशिक्षण सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु विविधिकरण सजीव मॉडल केन्द्र में "ग्रीष्म ऋतु में भैंसों के रख–रखाव व वैज्ञानिक प्रबंधन" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन 9 जून को किया गया। इसमें भामटसर और जाखासर गांव के 50 पशुपालक–कृषकों ने भाग लिया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने अपने सम्बोधन में कहा कि पश्चिमी राजस्थान में अधिक गर्मी और पानी की कमी के चलते विश्वविद्यालय द्वारा इस परियोजना के तहत भैंस पालन पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है। भैंसों में गर्मी के मौसम में प्रजनन और दुग्ध उत्पादन के स्तर को बनाए रखने के लिए वैज्ञानिक प्रशिक्षण और तौर–तरीकों की जानकारी होना जरूरी है। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश धूड़िया ने भी पशुपालकों को सम्बोधित किया। मुख्य अन्वेषक प्रो. बसन्त बैस ने बताया कि इस प्रशिक्षण में भैंस पालन और प्रजनन के विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ प्रो. जे.एस. मेहता, प्रो. आर.एन. कच्छवाहा, डॉ. अशोक खिंचड़ और डॉ. प्रमोद सिंह ने व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रशिक्षण में भैंसों के आवास में सूक्ष्म फव्वारों (फोगर) की व्यवस्था कर ताप नियंत्रण का डेमो प्रस्तुत किया गया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वी.यू.टी.आर.सी. चूरू में पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 14, 17 एवं 21 जून, 2016 को गांव रायपुरिया, देपालसर एवं रीडकला में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 54 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया–लाडनूं में प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया (लाडनूं) द्वारा 21, 22 एवं 23 जून, 2016 को आजवा, पालोट एवं जोरावरपुरा गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 99 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर में 140 पशुपालकों का प्रशिक्षण संपन्न

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 10, 14, 18, 21, 25 एवं 28 जून, 2016 को गांव नगंला मेथना, भढ़ावली, चोकीपुरा, अजाउ एवं बदनगढ़ में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 140 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 24 जून, 2016 को गांव वजीरपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में 29 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी. डूंगरपुर में 149 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 11, 16, 20 एवं 27 जून, 2016 को गांव खुमानपुरा, पारडा दरियाटी,रींछा एवं खरेडी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में महिला पशुपालकों सहित कुल 149 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 13, 21 एवं 24 जून, 2016 को गांव सनावडा, अणगौर एवं उड में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 76 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी. कोटा द्वारा 132 पशुपालक लाभान्वित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 18, 22, 25 एवं 28 जून, 2016 को गांव रेलगांव, हरिपुरा, गिरधरपुरा एवं चोमाकोट में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 132 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर में 265 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 4, 6, 7, 8, 10 एवं 25 जून, 2016 को गांव अराई, दौलतपुरा, तिलोनिया, किशनगढ़, नसीराबाद एवं पुष्कर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में 265 पशुपालकों ने भाग लिया।

के.वी.के. द्वारा किसानों एवं पशुपालकों को प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 13, 18, 22 एवं 27 जून को गांव डूंगराना, गोगामेडी, उतरादाबाद एवं चक सरदारपुरा में एक दिवसीय पशुपालक एवं कृषकों का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 105 कृषकों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी. धौलपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 10, 17, 22, एवं 25 जून, 2016 को गांव अलेपुरा, उमरी गांव, रजापुर एवं हांसी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में महिला पशुपालकों सहित कुल 219 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजूंदा (चितौड़गढ़) द्वारा 358 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा द्वारा 18, 21, 24, 27 एवं 29 जून, 2016 को गांव सुखवाड़ा, देवरी, बानसेन, कारूंदा एवं दनोरा गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 358 पशुपालकों ने भाग लिया।

गर्मियों में भेड़-बकरियों की प्रबंध व्यवस्था

राज्य में वर्ष 2012 की पशु गणना के अनुसार भेड़ों की संख्या 65.069 मिलियन और बकरियों की संख्या 135.17 मिलियन है। ज्यादा गर्मी भेड़ व बकरियों को नुकसान पहुंचाती है अतः स्वच्छ व ताजा जल व अच्छी गुणवत्ता वाला हरा चारा व गर्म हवाओं से बचने के लिए आवास व्यवस्था जरूरी होती है। अधिक गर्मी पड़ने से भेड़ व बकरियां ''हीट स्ट्रेस'' में आती है जिससे कि उनके उत्पादन में कमी होती है।

गर्मी से पड़ने वाले दुष्प्रभावः

- अधिक गर्मी से ''हीट स्ट्रेस'' की सम्भावना रहती है तथा पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता कम हो जाती है।
- गर्मियों में हरे चारे की उपलब्धता कम रहती है जिससे कि उनका शरीर कमजोर व पतला दिखाई देता है व वजन में कमी होने लगती है।
- अधिक तापमान से उच्च श्वसन दर व शरीर का तापमान भी बढ़ जाता है जिससे कि श्वांस लेने में समस्या होती है।
- काले व गहरे रंग की बकरी अति संवेदनशील होती है जबकि हल्के रंग की भेड़ व बकरियां कम संवेदनशील होती है।

गर्मियों से बचाव कैसे करें :

- प्रायः गर्मी से बचने के लिए भेड़ व बकरियों को स्वच्छ शीतल जल पिलाना चाहिये और सुबह 6.30 से 10.30 बजे तक व सायः 4.30 से 6.30 बजे तक चरने के लिए छोड़ना चाहिये।
- छायादार व स्वच्छ हवादार आवास होना चाहिये और उचित मात्रा में खनिज मिश्रण (मिनरल मिक्चर) देना चाहिये।
- भेड़ों में गर्मी से बचने के लिए हम सिरिंग (शरीर से ऊन हटाना) तथा बकरियों में क्लिपिंग (शरीर से बाल हटाना) करते हैं जिससे कि भेड़ व बकरियों को गर्मी से बचाया जा सके।
- पेड़ों एवं झाड़ियों का पाला काटकर भेड़ों को खिलायें जिससे कि उचित मात्रा में आहार मिल सके।
- जल स्त्रोतों के निकट छायादार स्थानों पर ही पशुओं को चरायें।

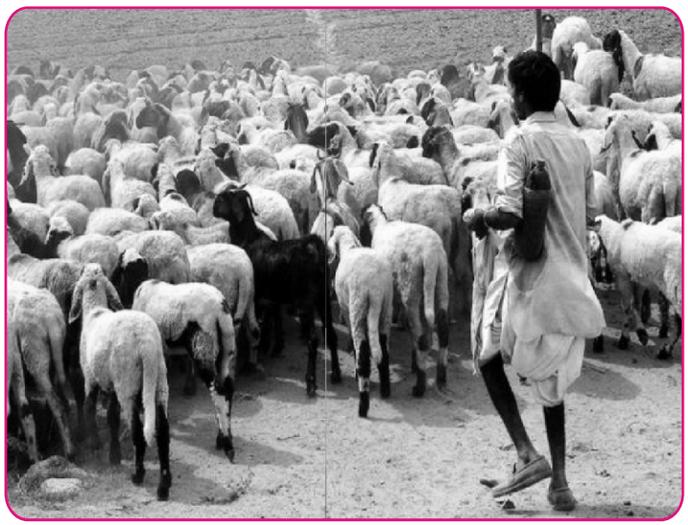

- गर्मियों में प्रोटीन तथा ऊर्जा की कमी होने लगती है जिसको पूरा करने के लिए यूरिया, सीरा व खनिज पदार्थो को चारे की कुट्टी के साथ खिलाया जाये तो यह खुराक हरे चारे और दाने से सस्ती एवं अधिक लाभदायक होगी।

विशेष देखभाल करें

- गर्मी के दिनों में भेड़ व बकरी पालन एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, विशेष रूप से उनके लिए जो भेड़ों को ऊन उत्पादन के लिये पालते हैं। गर्मी व नमी के दौरान स्वच्छ जल व छाया महत्वपूर्ण कारक है।
- उनके बाड़े की सफाई व पुताई अवश्य करें जिससे कि भेड़ व बकरी को श्वांस लेने में तकलीफ नहीं हो।
- छाया भेड़–बकरियों में गर्मी भार को कम करेगी।
- भेड़ व बकरियों के बाड़े में पंखे व फव्वारे की व्यवस्था करें।
- प्राकृतिक छाया उपलब्ध नहीं हो तो लकड़ी या बांस के आश्रय (झोंपड़) की व्यवस्था करनी चाहिये जिससे अधिक गर्मी महसूस नहीं होगी।
- गर्मी के दिनों में बाड़े में समय–समय पर पानी का छिड़काव करें जिससे कि हवा आने पर भेड़ व बकरियों को ठंडक महसूस होती रहे।
- छाया कपड़ों, केनवास व शीट धातु, जाल के कपड़ों से छाया की जा सकती है।
- बकरी, भेड़ से बेहतर गर्मी बर्दास्त कर सकती है। ढ़ीली त्वचा और फ्लेपी कान वाली बकरियां अन्य बकरियों से अधिक गर्मी सहन कर सकती है।
- अंगोरा बकरी, भेड़ और बकरियों की अन्य नस्लों की तुलना में गर्मी–तनाव के लिये कम सहनशील होती है।

डॉ. मुकेशचन्द शर्मा, डॉ. राजेन्द्र कुमार नागदा,
डॉ. श्वेता चौधरी एवं डॉ. अनिल मोर्दिया,
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां–वल्लभनगर

अपने विश्वविद्यालय को जानें

प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजुवास की 2010 में स्थापना के साथ ही विश्वविद्यालय का एक महत्वपूर्ण अंग प्रसार शिक्षा निदेशालय अपने अस्तित्व में आ गया था। प्रसार शिक्षा निदेशाालय के प्रशासनिक नियंत्रण में विश्वविद्यालय के बीकानेर, जयपुर और वल्लभनगर (उदयपुर) में स्थित संस्थानों में प्रशिक्षण केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) में एक कृषि विज्ञान केन्द्र तथा 12 जिलों बाकलिया (नागौर), कुम्हेर (भरतपुर), सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर), बोजून्दा (चितौड़गढ़), कोटा, चूरू, डूंगरपुर, अजमेर, टोंक, सिरोही, धौलपुर, और लूनकरणसर (बीकानेर) में पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण और अनुसंधान केन्द्र कार्यशील हैं। निदेशालय के प्रमुख उद्देश्यों में कृषकों और पशुपालकों तक पशुपालन तकनीक का हस्तान्तरण, युवाओं, महिलाओं और पशुपालकों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन, राज्य सरकार और गैर सरकारी संगठनों में कार्यरत अधिकारियों और कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण और पशुपालन उपयोगी साहित्य का प्रकाशन एवं विज्ञान मेलों का आयोजन, प्रदर्शनी, रेडियो वार्ताएं आदि का प्रसारण करवाना शामिल है। प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा देश के प्रमुख शहरों में राष्ट्रीय स्तर के कृषि, पशुपालन विज्ञान मेलों और प्रदर्शनियों में राजुवास द्वारा विकसित उन्नत पशुपालन, पशु आहार, पशु चिकित्सा तकनीकों का प्रदर्शन करके अब तक 7 पुरस्कार प्राप्त कर उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज करवाई है। प्रसार शिक्षा निदेशालय ने दूर–दराज के ढ़ाणी–गांव के अंतिम छोर तक बैठे पशुपालक और कृषकों तक पशुपालन तकनीकी प्रशिक्षण पहुंचाने का उल्लेखनीय कार्य किया है। प्रति माह प्रकाशित होने वाला ''पशुपालन नए आयाम'' सहित विभिन्न पशुपालन उपयोगी साहित्य का प्रकाशन करवाया जाता है। राज्य के सभी आकाशवाणी केन्द्रों से प्रत्येक गुरूवार को ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम का प्रसारण पशुपालकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा अब तक 115 प्रशिक्षणों का आयोजन कर के 2944 पशुपालक–किसानों को लाभान्वित किया गया है। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों द्वारा 390 आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में 11844 पशुपालकों को लाभान्वित किया गया है। विश्वविद्यालय के संस्थानिक प्रशिक्षण केन्द्रों द्वारा 193 प्रशिक्षणों के माध्यम से 6819 पशुपालक और कृषकों को प्रशिक्षित किया गया है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जुलाई, 2016

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	बाँसवाड़ा, भरतपुर, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, दौसा, झुंझुनू, सवाई माधोपुर, अलवर, सिरोही, बाड़मेर, चूरू, अजमेर
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, चूरू, नागौर, अजमेर, कोटा
चेचक (माता रोग)	बकरी, भेड़, ऊँट	बीकानेर, जैसलमेर, जयपुर, बाड़मेर, जालोर, हनुमानगढ़
गलघोंटू	गौवंश, भैंस	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, दौसा टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, सिरोही, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
ठप्पा रोग	गौवंश, भैंस	जयपुर, बीकानेर, झुंझुनू, अलवर, जैसलमेर, चितौड़गढ़
बोचूलिज्म	गौवंश	बीकानेर,जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर, नागौर, चूरू
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, अलवर, नागौर, धौलपुर, झुन्झुनू, अजमेर
सर्रा (तिबरसा)	ऊँट, भैंस, गौवंश	अनूपगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, भरतपुर
थाइलेरिओसिस, बबेसिओसिस	गौवंश	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, बून्दी, चूरू
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि एवं फीता–कृमि)	गौवंश, भैंस, बकरी, ऊँट	बीकानेर, सीकर, धौलपुर, अलवर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा, राजसमन्द, भरतपुर, उदयपुर
खुजली	ऊँट	बीकानेर, जैसलमेर, झुंझुनू, बाड़मेर, जोधपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

उन्नत पोषण से बढ़ती है– पशुओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता

सभी पशुओं में उनके नवजात, गर्भावस्था, दुधारू या फिर बीमारी व उत्तम स्वास्थ्य की अलग–अलग अवस्थाओं में उनकी कार्य क्षमता को बनाए रखने के लिए उचित व उन्नत पशु आहार की जरूरत रहती है। पशु के आहार में जो पोषक तत्व होते हैं वे ही उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता का आधार होते हैं। ये पोषक तत्व पशु शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित करते हैं। प्रतिरक्षा प्रणाली की कोशिकाओं में रिएक्टिव ऑक्सीजन स्पीशिज की बहुतायत होती है जिससे कि वे पैदा करने वाले सूक्ष्म रोगाणुओं से लड़ते हैं। पशु शरीर का इस लड़ाई के दौरान हनन होता है। इस समय क्षतिग्रस्त होने से बचाने के लिए एंटीऑक्सीडेंटस वाले पोषक तत्व निम्न प्रकार हैं :–

कैरोटिनॉईड्सः– ये पौधों में पाए जाने वाले वे वर्णनिक हैं जिन्हें विटामिन–ए का स्त्रोत कहा जाता है। विटामिन–ए स्वयं तो एंटीऑक्सीडेंट हैं, साथ ही कैरोटिनॉइड्स स्वयं प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित भी करते हैं। जिन दुधारू पशुओं को ये दिया जाता है उनमें थनैला रोग होने की संभावना कम होती है।

विटामिन–ई एवं सेलेनियमः– सेलेनियम प्रतिरक्षा प्रणाली कोशिकाओं की रोगाणु मारने की क्षमता को बढ़ा देता है। विटामिन ''ई'' एवं सेलेनियम एंटीऑक्सीडेंटस की तरह तो काम करते ही हैं साथ ही पशुओं में एंटीबोडीज का उत्पादन भी बढा देते हैं, जिससे रोगों से लड़ने की क्षमता बढ जाती है। ये दोनों तत्व एकीकृत रूप से अधिक प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। इन पोषक तत्वों के प्रभाव दुधारू पशुओं में अविरोधी रूप से देखे गए हैं।

ओमेगा–3 फैटी एसिडः– अलसी के बीज इस पोषक तत्व से भरपूर हैं। जिन पशुओं को यह पोषक तत्व गर्भावस्था के दौरान खिलाया जाता है उनमें प्रसव संबंधित जटिलताएं एवं सूजन संबंधी प्रतिक्रियाएं संभवतः कम पायी जाती हैं। ये पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा देता है।

क्रोमियमः– यह पशु कार्यिकी को विभिन्न प्रकार से लाभान्वित करता है। विशेषकर जब यह तनाव की स्थिति में दिया जाता है तो उनके दुष्प्रभाव को कम करता है। क्रोमियम के खिलाने से एंटीबोडीज का स्तर शरीर में बढ़ जाता है।

जिंकः– यह एक प्रतिरक्षक पोषक तत्व के रूप में जाना जाता है। उसकी कमी से कोशिकाओं की संख्या नहीं बढ़ पाती जो कि प्रतिरक्षा प्रणाली की एक महत्वपूर्ण घटना है। जब भी कोई बाह्य रोगाणु शरीर पर हमला करता है तो इसकी कमी से पशु में रोग होने की संभावनाएं बढ़ जाती है।

कॉपरः– कॉपर शरीर में विभिन्न प्रकार के प्रोटीन से जुड़ा रहता है। यह कोशिका मध्यस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली को बढाता है। सामान्यतः कॉपर कवक जनित रोगों से भी पशु को बचाता है। प्रतिरक्षा प्रणाली के न्यूट्रोफिल्स कवक को समाप्त करने में महत्वपूर्ण हैं।

कैल्शियमः– दूध संश्लेषण का सबसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व है, कैल्शियम। प्रतिरक्षा प्रणाली की ल्यूकोसाईट्स संकेतन के लिए इसका विशेष महत्व है। जिन पशुओं को प्रसव से पहले व दूध उत्पादन के दौरान पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम नहीं मिलता, वे विभिन्न रोगों से घिर जाते हैं। जैसे दुग्ध ज्वर अर्थात कैल्शियम की कमी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने का एक बहुत बड़ा कारण है।

उपरोक्त में से अधिकतर पोषक तत्व खनिज की श्रेणी में आते हैं। इन सभी का महत्व इनकी कमी होने पर सामने आता है। लवण मिश्रण निर्धारित मात्रा में बांटे में मिला कर अवश्य दें। दुधारू पशुओं को साथ ही कैल्शियम का घोल भी पिलाएं। हालांकि ये कम मात्रा में पशु शरीर के लिए पर्याप्त है परन्तु इनकी अनुपस्थिति बढने से रोग को आमंत्रित कर सकती है। इसलिए अपने पशुओं को संतुलित आहार दें और उनसे अत्यधिक लाभ लें।

–डॉ. रूचि मान, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में पशुओं की देखभाल कैसे करें।

पशुपालक भाईयों! ग्रीष्म ऋतु के बाद अब जुलाई माह से वर्षा ऋतु की शुरूआत हो रही है। राजस्थान राज्य भू–भाग के हिसाब से एक विस्तृत राज्य है और भौगोलिक परिस्थिति व जलवायु में भी राज्य के विभिन्न जिलों में काफी अन्तर है। जहां राज्य के दक्षिणी जिलों में वर्षा की शुरूआत हो रही है वहीं उत्तर–पश्चिमी जिलों को वर्षा का और इन्तजार करना पड़ेगा। लेकिन कुछ सामान्य बदलाव पूरे राज्य भर को प्रभावित करते हैं। इस माह गर्मी में कमी आने के साथ ही वातावरण में नमी बढ़ेगी, जिन स्थानों पर वर्षा शुरू हो गई है वहां पर कच्ची हरी घास उगेगी, कुछ स्थानों पर अधिक वर्षा से जल भराव की स्थिति भी सामने आयेगी तथा गंदे पानी के भराव से चारा–पानी भी दूषित होने की संभावना रहेगी। अतः इस समय पशुओं में विभिन्न प्रकार की समस्याएं देखने को मिल सकती हैं। अधिक गर्मी व अधिक नमी (उमस) के कारण गाय–भैंस वातावरणीय तनाव से ग्रसित होकर गलघोंटू व लंगड़ा बुखार नामक रोगों से प्रभावित हो सकते हैं। यह दोनों खतरनाक रोग है जिसमें अल्प समय में प्रभावित पशु की मृत्यु हो जाती है। गर्मी में चारे की कमी के बाद चारागाह में अचानक चारे की अधिक उपलब्धता से पशु (मुख्यतः भेड़–बकरी) फड़किया रोग से प्रभावित हो सकता है। फड़किया रोग अधिक चारा खाने से होता है जिसमें भेड़–बकरियों की अत्याधिक मृत्यु होती है। दूषित चारा–पानी के सेवन से पशु आंत रोगों से ग्रसित हो सकता है। साथ ही आंतरिक परजीवी भी पशु को प्रभावित कर सकते हैं। इसी प्रकार अत्याधिक चारे से दस्त रोग की सम्भावना भी रहती है।

अतः पशुपालकों को इस बदलते मौसम में अपने पशुओं को स्वस्थ रखने के लिए निम्न उपायों पर ध्यान देना चाहिये–

- ❖ पशुओं को शुरूआती वर्षा में भीगने से बचायें। विशेषकर बछड़े–बछड़ियों, मेमनों इत्यादि में भीगने से न्यूमोनिया की सम्भावना रहती है।
- ❖ अत्याधिक गर्मी व नमी के वातावरण में जुताई में काम आने वाले व बोझा ढ़ोने वाले पशुओं से ज्यादा काम न लें अन्यथा गलघोंटू की सम्भावना रहती है।
- ❖ मौसम में अचानक बदलाव आने से पशु लंगड़ा बुखार से भी अत्याधिक प्रभावित होते हैं, खासकर गर्मी के समय ओलावृष्टि होने पर लंगड़ा बुखार महामारी का रूप ले सकता है। अतः इस समय मौसम के बदलाव से पशु को बचा कर रखें।
- ❖ यदि चारागाह में नया हरा चारा उग आया है तो भेड़–बकरियों को जरूरत से ज्यादा न चरायें, ताकि उन्हें फड़किया से प्रभावित होने से बचाया जा सके।
- ❖ पशुओं को दूषित व संक्रमित चारा–पानी सेवन से बचाएं ताकि आंतरिक परजीवी और दस्त रोग इत्यादि से पशु प्रभावित न हो सके।

वर्षा ऋतु के प्रारम्भ से ही जल भराव की स्थिति पर ध्यान दें एवं पशु बाड़े से जल निकासी के पर्याप्त प्रबंध करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

अपने स्वदेशी भैंस वंश को पहचानें — सूरती भैंस – गौरव देश का

सूरती नस्ल की भैंस गुजरात राज्य की माही तथा साबरमती नदियों के बीच के स्थानों में पाई जाती है। इस नस्ल की सर्वश्रेष्ठ भैंसें गुजरात के आणंद, खैरा, नादियाद व बड़ौदा जिलो में पाई जाती है। प्रदेश के दक्षिणी जिलों विशेषतः उदयपुर, चितौड़गढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा में सूरती भैंस पायी जाती है। राजुवास के पशु अनुसंधान केन्द्र, नवानिया–वल्लभनगर (उदयपुर) द्वारा सूरती भैंसों का संवर्द्धन व उन्नयन किया जा रहा है। वल्लभनगर में भी श्रेष्ठ नस्ल की भैंसें रखी जाती है तथा उदयपुर एवं चितौड़गढ़ जिलों में इस नस्ल के उन्नयन के लिए कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम चलाया जा रहा है। सूरती नस्ल की भैंसे मध्यम भार व आकार की सीधी व पालतू होती हैं। सिर का उपरी भाग लम्बा चौड़ा तथा उपर की ओर उभरा हुआ होता है तथा इसके सींग चपटे तथा दरांती (हंसिये) के आकार के होते है जो कि सींग निकलने के आधार पर पहले नीचे की तरफ फिर पीछे तथा उसके बाद में ऊपर उठते हैं तथा हुक के आकार के हो जाते हैं। इसकी चमड़ी का रंग काला या तांबे के रंग का भूरा होता है। पीठ की हड्डी अन्य भैंसों की नस्लों की तुलना में बिल्कुल सीधी होती है तथा अच्छी नस्ल की भैंसों पर गर्दन व कंधे के पास में दो सफेद निशान होते हैं। सिर के अग्रभाग में सफेद टीका तथा पैरों के छोर तथा पूंछ के अन्त में सफेद बाल होते हैं। पूंछ लम्बी तथा मुलायम होती है। इस नस्ल के पशु दूध, मांस तथा खेती में हल्के काम के लिये प्रयुक्त किये जाते हैं। यह भैंस अच्छे डेयरी फार्मो पर प्रथम ब्यात में औसत 1500–1600 किलो तथा बाद में औसतन 1900–2500 किलो दूध देती है। थन तथा अगाड़ा वर्गाकार, बड़ा तथा पिछली टांगों के बीच में होता है। शारीरिक भार नर– औसत 500–700 कि.ग्रा. व मादा औसत 408–650 कि.ग्रा. रहता है। दो ब्यांत के बीच लगभग 183 दिन दूध नहीं देकर सूखी रहती है। दो ब्यातों के बीच का अन्तराल औसत 461 दिन तथा ब्याने के औसतन 170 दिन बाद वापिस ग्याभिन होती है। लगभग 309 दिन ग्याभिन रहती है तथा एक ब्यांत में औसत 285–305 दिन तक दूध देती है। दूध में वसा की मात्रा 7–9 प्रतिशत तक रहती है। पशु अनुसंधान केन्द्र, वल्लभनगर में चयन पद्धति द्वारा सूरती भैंसों के उत्पादन गुणों का लगातार उन्नयन किया जा रहा है।

सफलता की कहानी — कृषि एवं पशुपालन मिश्रित खेती की मिसाल बने- दयाराम

अकाल एवं सूखे के दौर में बहुत बड़ा कृषक वर्ग जलवायु परिवर्तन के चलते सिर्फ पारम्परिक खेती कर अपने आप को हताश महसूस करते हैं। वहीं एक नई सोच के साथ अपनी ऊर्जा एवं संसाधनों को नवीन तकनीकी द्वारा इस्तेमाल कर खेती एवं पशुपालन को मिश्रित खेती का रूप देकर अपने आप को सक्षम बनाया और एक अनूठी मिशाल कायम की है– डूंगराना के प्रगतिशील कृषक एवं पशुपालक दयाराम प्रगड़ ने! उनका मात्र 30 बीघा में फैला प्रगड़ कृषि फार्म दिन दूनी–रात चौगुनी गति से फल–फूल रहा है। उन्होंनें अपने फार्म में जैविक खेती (4 बीघा), साइलो बैग, अजोला यूनिट, प्याज की नर्सरी एवं भण्डारण की नवीन तकनीक, पशुपालन में मुर्रा नस्ल की भैंसे एवं साहीवाल नस्ल की गायें, कुक्कुट एवं बत्तख पालन, हाथी घास, नींबू, खजूर अंगूर व आम इत्यादि का बाग–बगीचा, जल प्रबंधन के लिए बूंद–बूंद सिंचाई एवं फव्वारा पद्धति को अपनाकर खेती को लाभदायक स्वरूप प्रदान किया है। दयाराम विभिन्न नवीन तकनीकों को अपनाने के साथ–साथ उनका प्रसार भी करते हैं, जिससे क्षेत्र के अन्य किसान भाई भी इसका लाभ ले सकें। दयाराम कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के माध्यम से राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय की नवीनतम जानकारी एवं तकनीकों को ग्रहण कर खेती एवं पशुपालन को नए आयाम देकर फायदा उठाते हैं। चारा संरक्षण के साइलो बैग का उपयोग, साइलेज बनाने की विधियां, अजोला तकनीकी को फार्म पर अपनाना, नस्ल सुधार के अन्तर्गत साहीवाल नस्ल की गायों को उपयोग में लेना प्रमुख है। हाल ही में उन्होंने उपरोक्त सभी तकनीकों का प्रदर्शन हनुमानगढ जिला स्तरीय किसान मेले में किया जहां उन्हें प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वे कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर एवं राजुवास के सहयोग और मार्गदर्शन को अपनी सफलता के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। (सम्पर्क– **दयाराम प्रगड़, डूंगराना, नोहर** (मो. 9460680623)

निदेशक की कलम से...

पशुपालन की नौ विधाओं में सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों का लाभ उठायें

वेटरनरी विश्वविद्यालय ने पशुपालन में युवाओं, पशुपालकों तथा उद्यमियों के कौशल विकास और आय को बढ़ाने के लिए एक से दो माह की अवधि के 9 लघु प्रशिक्षण सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ–वैज्ञानिक प्रायोगिक और सैद्धांतिक प्रशिक्षण देंगे। इसे पूरा करने और उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को विश्वविद्यालय द्वारा प्रमाण पत्र भी प्रदान किये जायेंगे। इन पाठ्यक्रमों में आठवीं कक्षा अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कोई भी व्यक्ति शामिल हो सकता है। पालतू पशुओं के प्राथमिक उपचार में दक्ष व्यक्ति मौके पर ही पशुओं के स्वास्थ्य की सार–संभाल, दुर्घटना व रोग की स्थिति में उपचार करने में समर्थ हो जाएगा। इसी प्रकार के दो पाठ्यक्रम डेयरी फॉर्म मैनेजमेन्ट और डेयरी उत्पादों के मूल्य संवर्द्धन के शुरू किये गए हैं। इन पाठ्यक्रमों में शामिल होकर युवा डेयरी व्यवसाय को अपनाकर घर बैठे आय प्राप्त कर सकेंगे। भेड–बकरी पालन करने वालों के लिए उत्पादन को बढाने के लिए प्रतिभागियों को वैज्ञानिक तथा संगठित फार्म से संबंधित व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। जैविक पशुधन उत्पादन के लिए भी एक पाठ्यक्रम पृथक से शुरू किया गया है। इसके अलावा मुर्गी पालन को एक लाभकारी व्यवसाय शुरू कर आमदनी प्राप्त करने के लिए मुर्गी और ब्रॉयलर का उत्पादन करने के दो पाठ्यक्रम भी शुरू किये गए हैं। इसी के साथ मुर्गियों तथा भैंस, गायों में आहार प्रबंधन पर भी अलग–अलग पाठ्यक्रम शुरू किया गया है। सभी वर्गों के पशुओं के लिए भी पशु आहार संयोजन का एक पाठ्यक्रम पृथक से भी रखा गया है। पशुओं को उचित और संतुलित आहार की वैज्ञानिक जानकारी से दुग्ध और अन्य पशु उत्पाद भरपूर प्राप्त करने में मदद मिलेगी। विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.rajuvas.org पर इन पाठ्यक्रमों की जानकारी और संदर्भ विभाग की सूचना उपलब्ध है। प्रवेश के लिए विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय बीकानेर से 0151–2200505 पर फोन करके या सम्पर्क करके पाठ्यक्रम में शामिल हुआ जा सकता है। **प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **जुलाई, 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.स.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	डॉ. दिनेश जैन 8003300472 पशुपोषण विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	बारिश के मौसम में मुर्गी पालन प्रबन्धन	07.07.2016
2	प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत 9414138211 कुलपति, राजुवास, बीकानेर	प्रदेश में पशुपालन विकास में राजुवास की आगामी कार्य योजना	14.07.2016
3	प्रो. आर.के.धूड़िया 9414283388 निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर	पशुपालक उत्थान में विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा कार्यक्रम	21.07.2016
4	प्रो. राकेश राव 8107110011 निदेशक अनुसंधान, राजुवास, बीकानेर	पशुचिकित्सा व पशुपालन में विश्वविद्यालय के अनुसंधान कार्य	28.07.2016

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने है।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया